समकालीन दोहे

सत्यम भारती

कंक्रीटों के वन हुए, शहर बन गया खेत ।
मानव जहरीला हुआ, नदी बन गई रेत।।

साथी जिसका कर्म हो, और हृदय हो शुद्ध ।
पहने करुणा का कवच,बनता गाँधी, बुद्ध ।।

रोज़ मथा दिल का दही, निकला तब नवनीत ।
यूँ कोई चलते राह में ,बने नहीं मनमीत।।

रिश्तों के मुख्यपृष्ठ पर, अजब-गजब तस्वीर ।
वृद्धाश्रम अब लिख रहे, वृद्धों की तकदीर ।।

सूरज के तो पास है , रेशम और कपास ।
जुगनू को मिलता रहा, कैक्टस औ सल्फास ।।

तन नफरत की कोठरी, मन है कोरा काठ ।
सबको वही पढ़ा रहा, मानवता का पाठ ।।

जिस्म व रूह करने लगें, आपस में जब बात ।
आए जब सज कर इधर, यादों की बारात ।।

दशरथ भूखे मर रहे, डिस्को जाते राम।
होते भारत देश में, अब ऐसे भी काम।।

सासू माँ दाई बनी, ससुर बने दरवान।

इनको सूखी रोटियाँ, कुत्तों को पकवान।।

कैसे सुधरे देश में, हलधर के हालात।
खेतों पर मँडरा रही, गिद्धों की बारात।।

सत्ता ने ऐसे गढ़े, जन हित हेतु उसूल।
जूते सिर की शान हैं, पगड़ी फांके धूल।।

जनता सोचो तो ज़रा, क्यों है यह परिणाम।
बोकर पेड़ बबूल का, कब मिलता है आम।।

जंगल से अब गांव का, अलग कहाँ किरदार।
नोच रहे हैं देह को, कुत्ते, गिद्ध, सियार।।

आँखों का पानी मरा, मरी देह की धूप।
ऐसे ही सत्ता नहीं, दिखती है विद्रूप।।

ढाल कहीं पाया नहीं, मिले तीर-तलवार।
जीवन भर करते रहे, जख्मों का व्यापार।।

कथनी-करनी में यहाँ, दिखता भारी फर्क ।
नैतिकता दूषित हुई, लगते तर्क कुतर्क ।।

जिसने किया विरोध वे, चाट रहे हैं थूक।
सबकुछ बदलेगी यहाँ, सत्ता की बंदूक।।

कहाँ शाम को दिख रही, चिड़ियों की चौपाल ।

बेच रहा है यह शहर, गोश्त, उड़ानें, खाल।।

मानवता धूमिल हुई, मन जी रहा अकाल।
बदल रहे हैं साल पर, बदल न पाये हाल।।

जिनपर टिका भविष्य है, वे ही हैं बेहाल।
युवक, कृषक, मजदूर के, हिस्से सिर्फ सवाल।।

कोयल पर प्रतिबंध था, कूक हो गई ढेर।
कांव-कांव कर करती रही, दिन भर ही मुंडेर।।

अखबारों के शब्द अब, ऐसे हुए समर्थ।
सीधी-सीधी बात के, टेढ़े-मेढ़े अर्थ।।

इधर-उधर वो फेंककर, अपवादों की पीक।
आज खिंचना चाहते, वर्तमान की लीक।।

जुगनू के मन में बसा, कैसा झूठा दंभ।
बोल रहा उससे यहाँ, हर दिन का प्रारंभ।।

जिसने सत्ता पक्ष में, किया खूब दुस्कृत्य।
उसे उपाधी में मिला, नाम नवल आदित्य।।

लोग सुन रहे हैं यहाँ, हुआ-हुआ के बोल।
फिर भी उसको शेर का, बांट रहे हैं मोल।।

क्या है, बिल्कुल व्यर्थ है, उसका यह उत्साह।

सूरज को रूमाल में, रखने की है चाह।।

कलियाँ भौरों से करें, आख़िर कैसे प्रेम।
मन में पैठी वासना, खेले हर दिन गेम।।

कभी बनी उपमान वह, गढ़े नवल प्रतिमान।
फिर भी निर्बलता रही, नारी की पहचान।।

भाग गई उसकी बहन, मुझे बड़ा है खेद।
पर उड़ते माखौल वे, जिनमें होता छेद।।

सूखे का इल्जाम फिर, दिया हिरण पर डाल।
भूख मिटाई शेर ने, इसी तरह फिलहाल।।

रुतबे में मंत्री रहे, सारा तंत्र अपंग।
लोकतंत्र में लोक ने, देखे कैसे रंग।।

भाषण में कहते रहे, मेरा देश महान।
झूठ, कपट, छल-छंद की, नेताजी दूकान।।

जलियाँवाला बाग से, हों न पुन: हालात।
बंदूकें बोएँ चलो, करें नई शुरुआत।।

दिन मुर्दाघर हो गये, रातें हुईं मसान।
इस कोरोना-काल का, कैसे करूँ बखान?

घर में क़ैदी हो गये, तबसे उजले बाल।

जबसे शहरी रम पिए, बहक गया चौपाल।।

मना नहीं फिर गाँव में, दीपों का त्योहार।

जनप्रतिनिधि के द्वार पर, लेकिन वंदनवार।।

'कुछ बदले' हमने कहाँ, इसका किया प्रयास।

सदियों से हम जी रहे, हत्या का उल्लास।।

सत्यम भारती,

ग्राम+पोस्ट- वनद्वार, वार्ड न. 04, भाया- रजौड़ा, थाना- नीमा चांदपुर, जिला- बेगूसराय-851131, बिहार, मो.8677056002.